नवोन्मेष
रुक्टा (राष्ट्रीय)

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)
(अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ से संबद्ध)

website: www.ructarashtriya.org **Email:** info@ructarashtriya.org

केन्द्रीय कार्यालय : देराश्री शिक्षक सदन, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर-302004
प्रधान कार्यालय : सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर-305001 (राज.)
अध्यक्ष : डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत, बीकानेर मो. 9414452369, 9983007575
महामंत्री : डॉ. नारायणलाल गुप्ता, अजमेर मो. 9414497042

परिपत्र क्रं. : रुक्टा (रा.)/2014-15/03 चैत्र बदी २ वि. स. २०७१ तदनुसार 07 मार्च, 2015
(सभी इकाई सचिवों एवं सक्रिय सदस्यों को समस्त सदस्यों में प्रसारित करने के अनुरोध सहित प्रेषित)

प्रिय महोदय/महोदया,

सादर नमस्कार।

पिछले परिपत्र के पश्चात् श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा में सम्पन्न 53वें प्रांतीय अधिवेशन के विवरण, महामंत्री प्रतिवेदन, अंकेक्षित आय-व्यय लेखा, साधारण सभा द्वारा पारित प्रस्ताव, नवीन कार्यकारिणी के मनोनयन, कर्तव्य बोध दिवस के आयोजन सहित संगठन की अन्य गतिविधियों एवं उपलब्धियों के साथ यह परिपत्र आपके समक्ष प्रस्तुत है।

53वें प्रांतीय अधिवेशन का विवरण

संगठन का 53वाँ प्रांतीय अधिवेशन 18 व 19 फरवरी 2015 को श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में राज्य के सभी जिलों से राजकीय महाविद्यालयों एवं छह विश्वविद्यालयों के एक हजार से अधिक प्रतिनिधियों ने सहभाग किया। अधिवेशन के संभागियों में महाविद्यालयों के व्याख्याताओं, शारीरिक शिक्षा निदेशकों, पुस्तकालयाध्यक्षों, निदेशालय के सहायक, उप एवं संयुक्त निदेशकों, विश्वविद्यालयों के आचार्यों, सहायक एवं सह आचार्यों सहित अनेक सेवानिवृत्त शिक्षक शामिल थे।

1. **उद्घाटन सत्र** - अधिवेशन का उद्घाटन सत्र अ. भा. रा. शैक्षिक महासंघ के महामंत्री प्रो. जगदीश प्रसाद सिंघल के मुख्य आतिथ्य एवं महासंघ के अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सत्र का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती एवं श्री गोविन्द गुरु की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्पण कर तथा महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना कर किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मुरलीधर मूंदड़ा ने स्वागत भाषण दिया। रुक्टा (राष्ट्रीय) के अध्यक्ष डॉ. मधुर मोहन रंगा ने अपने उद्बोधन में कहा कि तकनीकी शिक्षा जरूरी है लेकिन इसके चलते चॉक-टॉक सिस्टम समाप्त हो रहा है, जिनमें सुधार की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि ग्रॉस एनरोलमेंट अनुपात बढ़ाने पर सरकार जोर दे रही है, लेकिन इसके साथ गुणवत्ता पर भी ध्यान आवश्यक है। संगठन महामंत्री ने शिक्षा एवं शिक्षकों की समस्याओं के सम्बन्ध में संगठन की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी देते हुए कहा कि रुक्टा (राष्ट्रीय) हमेशा शिक्षक एवं शिक्षा के व्यापक हित में सक्रियता से कार्य कर रहा है तथा संगठन के प्रयासों से वरिष्ठ व चयनित वेतनमान की संवीक्षा, प्राचार्यों, उपाचार्यों की डीपीसी एवं पदस्थापन, व्याख्याताओं की नवीन भर्ती की प्रक्रिया प्रारम्भ होने, प्रायोगिक परीक्षा हेतु कर्तव्य पर मानने, 30-6-2015 तक वरिष्ठ, चयनित वेतनमान व पे-बैंड-4 हेतु आवेदन

आमंत्रित करने, विश्वविद्यालयों द्वारा परीक्षा पारिश्रमिक दर में वृद्धि करने सहित कई प्रमुख समस्याओं का हल इस सत्र में हुआ है। मुख्य अतिथि के रूप में उद्‌बोधन देते हुए प्रो. सिंघल ने कहा कि अपनी गरिमा का ध्यान रखना शिक्षक का पहला कर्तव्य है। नेता कभी भी सामाजिक परिवर्तन के संवाहक नहीं बने हैं, वास्तविक सामाजिक परिवर्तन तो शिक्षकों ने ही किया है। उन्होंने कहा कि संगठन के गुरु वंदन, कर्तव्य बोध दिवस जैसे कार्यक्रम शिक्षकों की मर्यादा को पुर्नस्थापित करने के ही माध्यम है। प्रो. सिंघल ने कहा कि शैक्षिक अधिवेशन सरकार को आईना बताते हैं कि शिक्षक समस्याओं को लेकर वे कितने सक्रिय हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल ने कहा कि आज शिक्षक को अपने मान-सम्मान की चिंता रहती है लेकिन आखिर सम्मान में कमी क्यों हुई इसका उत्तर भी ढूंढ़ना होगा। उन्होंने कहा कि हमारी शिक्षा से तुलसी, कबीर, रसखान जैसे संतों व पथ प्रदर्शकों के पाठ निकाल दिये गये जो हमें संस्कारों की शिक्षा देते थे। ये संस्कार हमें पत्नी के अलावा सभी स्त्रियों को माँ के समान मानने की शिक्षा देते थे। हम नवरात्रि पर कन्या पूजन भी इसी भाव से करते रहे हैं, किन्तु दुर्भाग्य से आज वे संस्कार नहीं मिल पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारे संविधान में हमने पंथ निरपेक्ष की जगह धर्म निरपेक्ष शब्द का प्रचलन कर दिया, जब धर्म ही हमारे साथ नहीं होगा तो फिर अधर्म तो होगा ही। उद्‌घाटन सत्र में 53वें अधिवेशन के अवसर पर संगठन द्वारा प्रकाशित भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा पर केन्द्रित स्मारिका **''तेजस्विनावधीतमस्तु''** का विमोचन भी किया गया। अधिवेशन संयोजक डॉ. महिपालसिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन आयोजन सचिव डॉ. राजेश जोशी ने किया।

2. **देराश्री स्मृति व्याख्यान** - अधिवेशन के द्वितीय सत्र में देराश्री स्मृति व्याख्यान पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर के कुलपति प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा ने दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी देश व समाज का विकास उसकी शिक्षा के विकास के समानुपात में ही होता है। शिक्षक को विद्यार्थियों के समक्ष स्वयं को एक रोल मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे छात्र शिक्षक को अपने जीवन के लिए आदर्श मान कर भविष्य की रचना करें। उनका कहना था कि वर्तमान समय की आवश्यकता टेक्नोनेशनिलज्म है और इसके लिए हमें विद्यार्थियों में उद्यमिता का विकास करना होगा। उन्होंने शिक्षण, उद्यमिता एवं स्वदेशी प्रयासों के भिन्न-भिन्न उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उपस्थित शिक्षक समुदाय से यह आह्वान किया कि विश्व गुरु भारत को पुन: ऊँचाईयों तक पहुँचाने के लिए अपने अध्यापन से सर्वश्रेष्ठ ज्ञान से युक्त विद्यार्थियों को तैयार करने का संकल्प करें। सत्र की अध्यक्षता करते हुए शैक्षिक मंथन पत्रिका के सम्पादक प्रो. संतोष पांडेय ने कहा कि हमें शैक्षिक नवाचार, शोध एवं चिंतन को आधार बनाकर राष्ट्रहित में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संचार का माध्यम बनना होगा। इस से पूर्व मंचासीन अतिथियों ने देराश्रीजी के चित्र पर माल्यार्पण किया। संगठन अध्यक्ष ने देराश्रीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया। अतिथियों का आभार महामंत्री ने प्रदर्शित किया। कार्यक्रम का संचालन संयुक्तमंत्री डॉ. गंगाश्याम गुर्जर ने किया।

3. **समूहश: बैठकें** - 18 फरवरी को सायंकाल समूहश: बैठकें सम्पन्न हुई जिसमें शिक्षकों द्वारा अलग-अलग समूहों में अपने क्षेत्र से संबंधित समस्याओं पर विचार मंथन किया गया। बैठक में प्रतिनिधियों ने संगठन की विभिन्न इकाईयों द्वारा पारित प्रस्तावों को प्रस्तुत किया। प्रस्तावों में राज्य एवं केन्द्र स्तर पर लंबित समस्याओं के अलावा विश्वविद्यालयों एवं स्थानीय स्तर की समस्याएं शामिल थी। राजकीय समूह की बैठक की अध्यक्षता उपाध्यक्ष डॉ. दीपक शर्मा एवं संचालन संयुक्त सचिव डॉ. गंगा श्याम गुर्जर ने किया। विश्वविद्यालय समूह की बैठक डॉ. हीराराम द्वारा संचालित की गई।

4. **खुला सत्र् एवं साधारण सभा** - 18 फरवरी का अन्तिम सत्र 53वें प्रांतीय अधिवेशन का खुला सत्र् एवं वार्षिक साधारण सभा का रहा। इस सत्र् में महामंत्री ने गत अधिवेशन के पश्चात् की गतिविधियों का विवरण देते हुए वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसे सदन ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। कोषाध्यक्ष डा. अखिलेश्वर शर्मा ने 1 जुलाई 2013 से 31 मार्च 2014 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के अंकेक्षित आय-व्यय विवरण तथा बैलेंस शीट को सदन के पटल पर रखा, जिसे सदन ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। खुले सत्र में साधारण सभा द्वारा पूर्व में पारित प्रस्तावों की पुन: पुष्टि करते हुए राज्य सरकार को भेजने के लिए दो नवीन प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से स्वीकार किये गये - (1) शैक्षिक परिसरों के

वातावरण को संस्कारक्षम बनाने के लिए सभी पक्षों द्वारा मिलजुल कर प्रयास किये जाये। (2) शोध हेतु सभी प्रकार के प्रोत्साहन एवं सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएँ। इसके अतिरिक्त गत अधिवेशन के पश्चात् दिवगंत शिक्षक साथियों को दो मिनिट मौन रख कर श्रद्धांजलि दी गई।

5. **शैक्षिक संगोष्ठी** - अधिवेशन के द्वितीय दिन **''मूल्य परक शिक्षा की प्रासंगिकता''** विषय पर शैक्षिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर पश्चिम क्षेत्र कार्यवाह मा. हनुमानसिंह राठौड़ ने गीता में उल्लेखित त्याग, श्रद्धा, सरलता एवं सदाचार जैसे मूल्यों को शिक्षा का अंग बनाने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा कि शिक्षा की वर्तमान स्थिति के लिए छात्र, शिक्षक, समाज एवं सरकार सभी जिम्मेदार हैं। उन्होंने पाश्चात्य भोग की वृत्ति का अनुसरण कर अपने मूल्यों एवं संस्कृति को तिलांजलि देने पर चिन्ता प्रकट करते हुए सात्विक प्रवृत्तियों के विस्तार हेतु सामूहिक प्रयत्नों की आवश्कता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि सत, तम, रज तीनों तत्व सबमें उपस्थित हैं, हमें सत तत्व को शिक्षा व संस्कारों के माध्यम से जागृत करने की जरूरत है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए अ. भा. रा. शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री मा. महेन्द्र कपूर ने कहा कि बालक को अच्छे संस्कार दिये बिना यह अपेक्षा करना कि बड़ा होकर वह हमारी सेवा करेगा ठीक नहीं है। उन्होंने आग्रह किया कि उत्तरदायित्वों से मुख मोड़ने के परिणाम गंभीर होंगे तथा हमें मूल्यों को शिक्षण व्यवस्था एवं हमारी दिनचर्या का अंग बनाना ही होगा। संगोष्ठी में डॉ. ओमप्रकाश पारीक, डॉ. राजकुमार चतुर्वेदी, डॉ. राधाकृष्ण, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, डॉ. एस.डी. शर्मा आदि शिक्षकों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। संगोष्ठी का संचालन शैक्षिक प्रकोष्ठ संयोजक डॉ. राजेन्द्र कुमार शर्मा ने किया। मंचासीन अतिथियों का परिचय डॉ. सोमकांत भोजक ने कराया।

6. **नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन** - अधिवेशन में अगले दो वर्ष के लिए रुक्टा (राष्ट्रीय) की नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन भी किया गया। मनोनित कार्यकर्ताओं के नामों की घोषणा संगठन के पूर्व अध्यक्ष प्रो. संतोष पांडेय ने की। नवीन कार्यकारिणी में **अध्यक्ष**-डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत, बीकानेर, **महामंत्री**-डॉ. नारायणलाल गुप्ता अजमेर, **उपाध्यक्ष**- (1) राजकीय - डॉ. सत्यनारायण शर्मा अनूपगढ़, (2) महिला-डॉ. रेखा भट्ट, उदयपुर, (3) विश्वविद्यालय-डॉ. राजीव सक्सेना जयपुर, (4) निजी-डॉ. सुमित्रा पारीक जयपुर, **संयुक्त सचिव**- (1) राजकीय - डॉ. गंगाश्याम गुर्जर अलवर, (2) महिला-डॉ. सरस्वती मित्तल चिमनपुरा, (3) विश्वविद्यालय-डॉ. हीराराम जोधपुर, (4) निजी-डॉ. योगेश गुप्ता जयपुर, **कोषाध्यक्ष**-डॉ. अखिलेश्वर शर्मा, जयपुर तथा **अंकेक्षक**-डॉ. सोमकांत भोजक जयपुर को मनोनित किया गया। इसके अतिरिक्त डॉ. जग्गोसिंह भरतपुर, डॉ. रचना आसोपा अलवर, डॉ. महेन्द्र गोखरु अजमेर, डॉ. कश्मीर भट्ट भीलवाड़ा, डॉ. राजेश जोशी बांसवाड़ा, प्रो. बाबूलाल मीणा करौली, डॉ. मंजु गुप्ता कोटा, डॉ. संजीव त्यागी जयपुर, डॉ. के. बी. बंसल कोटपुतली, डॉ. गोविन्द पुरोहित भोपालगढ़, डॉ. सुदर्शन राठौड़ उदयपुर, डॉ. सुरेन्द्र सोनी चुरू को प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मनोनित किया गया।

7. **समारोप कार्यक्रम** - संगठन के 53वें अधिवेशन का समारोप कार्यक्रम रा. स्व. संघ के अखिल भारतीय सह-सम्पर्क प्रमुख मा. अनिरुद्धजी देशपांडे के मुख्य आतिथ्य एवं महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मा. अनिरुद्ध देशपांडे ने कहा कि शिक्षा को हम मनुष्य निर्माण से जोड़ कर देखते हैं किन्तु आज शिक्षा केवल धनार्जन का माध्यम बन गई है। पहले मांग के अनुरूप उत्पादन होता था लेकिन अब पहले उत्पादन कर लिया जाता है और उसके बाद विज्ञापन आदि के माध्यम से मांग पैदा की जाती है। उन्होंने चिंता प्रकट करते हुए कहा कि आज भाषा एवं सामाजिक ज्ञान के विषयों में छात्र नहीं मिल रहे हैं। अनुसंधान भी आयातित हो रहे हैं, हमें इस पर गंभीर चिन्तन करना होगा और मैकाले के विचार से बाहर निकलना ही होगा। उन्होंने आह्वान किया कि शाश्वत जीवन मूल्यों एवं सनातन भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था को बाजार से हटा कर ज्ञान व संस्कार की ओर ले जाना होगा। उन्होंने कहा कि अगले 20 वर्षों में 65 प्रतिशत जनसंख्या युवाओं की होगी ऐसे में शिक्षकों का दायित्व बनता है कि युवा नक्सली, दुष्कर्मी व घोटालेबाज न बने, हमें छात्र हित एवं राष्ट्र हित में

शिक्षा क्षेत्र में कार्य करना होगा। हम लोग राष्ट्रवादी विचार के साथ जुड़े हैं इसलिए हम यूनियन करेंगे लेकिन ट्रेड यूनियनज्म नहीं करेंगे। अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए प्रो. कैलाश सोडानी ने कहा कि केन्द्रीय संस्थानों एवं सुदूर क्षेत्रों में अवस्थित उच्च शिक्षा संस्थानों को दिये जाने वाले बजट में बहुत बड़ा अन्तर है इससे उच्च शिक्षा का विस्तार एवं गुणवत्ता प्रभावित हो रही है, सरकार को इन स्थितियों पर चिंतन कर सुधार करना चाहिये। समारोप सत्र में बांसवाड़ा के सेवानिवृत शिक्षकों प्रो. बी. एल. दोसी, प्रो. डी. पी. जैन, प्रो. पी. एल. शर्मा, प्रो. के. एस. दाँतला, प्रो. पी. एस. हडक्शी, प्रो. रमेश तोमर, प्रो. बी. पी. जोशी, प्रो. वी. एन. वर्मा का सम्मान भी किया गया। समारोप सत्र का संचालन डॉ. राजेश जोशी ने किया एवं संगठन की ओर से अध्यक्ष डॉ. मधुर मोहन रंगा ने तथा स्थानीय आयोजन समिति की ओर से डॉ. महिपालसिंह ने आभार व्यक्त किया। सामूहिक वन्दे मातरम् के साथ अधिवेशन का समापन हुआ।

8. **शुभकामना संदेश** – 53वें प्रांतीय अधिवेशन की सफलता एवं इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका तेजस्विनावधीतमस्तु हेतु रा. स्व. संघ के सरकार्यवाह मा. भय्याजी जोशी, मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधराजे जी, गृहमंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, उच्च शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण जी सराफ, शिक्षा राज्य मंत्री प्रो. वासुदेवजी देवनानी एवं अखिल भारतीय राजकीय शैक्षिक महासंघ के संरक्षक प्रो. के.नरहरिजी के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए। संगठन सभी के प्रतिहार्दिक आभार व्यक्त करताहै।

शिक्षक समस्याओं के सम्बन्ध में संगठन की गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

1. **प्राचार्यों एवं उपाचार्यों के पदस्थापन आदेश जारी** – संगठन के प्रयासों से 24 दिसम्बर 2014 को प्राचार्यों एवं उपप्राचार्यों की डीपीसी सम्पन्न हुई। किन्तु चुनावी आदेश आचार संहिता के चलते पदस्थापन में देरी हो रही थी। संगठन ने सरकार के ध्यान में लाया कि प्राचार्यों एवं उपाचार्यों के नहीं होने से महाविद्यालयों के सामान्य काम-काज प्रभावित हो रहे हैं, अत: चुनाव आयोग से अविलम्ब अनुमति लेकर पद स्थापन किये जाएं। संगठन की मांग से सहमत होते हुए सरकार ने चुनाव आयोग से अनुमति प्राप्त कर आदेश संख्या प. 1 (20) शिक्षा/ग्रुप-3/2014 दिनांक 5-2-15 द्वारा 61 स्नातकोत्तर प्राचार्यों तथा आदेश प. 1 (19) शिक्षा/ग्रुप-3/2014 दिनांक 5-2-15 द्वारा 65 स्नातक प्राचार्यों तथा आदेश क्रमांक प. 1 (18) शिक्षा/ग्रुप-3/2014 दिनांक 5-2-15 द्वारा 108 उपाचार्यों के पदस्थापन आदेश जारी कर दिए।
2. **लोक सेवा आयोग से व्याख्याता भर्ती हेतु विज्ञप्ति जारी** – पिछले लम्बे समय से राज्य के कॉलेज शिक्षा विभाग में नई नियुक्तियाँ नहीं होने के कारण राज्य की उच्च शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। शिक्षक क्षमता से अधिक कार्यभार वहन कर रहे हैं, वहीं कई महाविद्यालयों में विषय शिक्षक नहीं होने से विद्यार्थियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। संगठन ने सरकार से रिक्त पदों की पूर्ति हेतु विभिन्न भेंटवार्ताओं एवं पत्रों के माध्यम से लगातार दबाव बनाया हुआ था। अंतत: संघर्ष सफल हुआ और राज्य सरकार की अभ्यर्थना पर राजस्थान लोक सेवा आयोग ने विज्ञापन संख्या 07/भर्ती/2014-15 दिनांक 12-01-15 द्वारा एक हजार से अधिक रिक्त पदों पर व्याख्याता भर्ती हेतु विज्ञप्ति जारी कर दी। शीघ्र ही रिक्त पदों पर नवीन नियुक्तियाँ होने की आशा है।
3. **प्रायोगिक परीक्षा हेतु कर्तव्य पर माने के आदेश** – विश्वविद्यालयों की प्रायोगिक परीक्षा सम्पन्न कराने के लिए शिक्षकों को राज्य सरकार द्वारा अकादमिक अवकाश देने का प्रावधान रहा है। संगठन द्वारा गत लम्बे समय से सरकार के ध्यान में लाया जा रहा था कि कि प्रायोगिक परीक्षा कार्य को अकादमिक उपलब्धि से जोड़ कर नहीं देखा जा सकता है अत: बोर्ड परीक्षा की भांति ही विश्वविद्यालय परीक्षा हेतु भी कर्तव्य पर माना जाना चाहिए तथा ग्रीष्मावकाश में प्रायोगिक परीक्षा सम्पन्न करवाने के लिए कर्तव्य पर मानते हुए पीएल का लाभ दिया जाना चाहिए। इस संबंध में 6 जनवरी 2015 को उच्च शिक्षा मंत्रीजी व विभाग के अधिकारियों के साथ सम्पन्न बैठक में इस विषय पर विस्तार से तर्कों सहित शिक्षकों का पक्ष रखा गया। आयुक्तालय के आदेश संख्या प 8 (17) रुक्टा राष्ट्रीय/अकाद/निकाशि/15/74/दिनांक 6 फरवरी 2015 द्वारा संगठन के तर्कों से सहमत होते हुए अंतत: सरकार ने प्रायोगिक परीक्षा सम्पन्न करवाने के लिए कर्तव्य पर मानने एवं ग्रीष्मावकाश में पीएल का लाभ देने के संबंध में आदेश जारी कर दिये।
4. **उच्च शिक्षा मंत्रीजी से भेंट** – 6 जनवरी को उच्च शिक्षा मंत्रीजी एवं विभाग के अधिकारियों के साथ सम्पन्न बैठक के क्रम में संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने 4 फरवरी को उच्च शिक्षा मंत्री श्री कालीचरणजी सराफ से भेंट की। कॉलेज

व्याख्याताओं की राजस्थान लोक सेवा आयोग से भर्ती प्रारम्भ करने, प्रायोगिक परीक्षा हेतु कर्तव्य पर मानने संबंधी आदेश जारी करने के लिए संगठन की ओर से मंत्रीजी का आभार प्रकट किया गया तथा शेष लम्बित समस्याओं के शीघ्र सकारात्मक समाधान की मांग की गई। मंत्रीजी ने विभिन्न समस्याओं के समाधान की प्रगति जानकारी देते हुए आश्वस्त किया कि जल्दी ही कतिपय आशानुकुल परिणाम प्राप्त होंगे।

5. **अधिवेशन हेतु अकादमिक अवकाश के आदेश** – रुक्टा (राष्ट्रीय) के 53 वें प्रान्तीय अधिवेशन में भाग लेने हेतु आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा ने आदेश क्रमांक एफ 8(17)रुक्टा राष्ट्रीय/अकाद/निकाशि/11/73 दिनांक 6 फरवरी 2015 द्वारा 18 व 19 फरवरी 2015 का विशेष अकादमिक अवकाश एवं नियमानुसार यात्रा अवधि अवकाश स्वीकृत करने के आदेश जारी किये हैं।

6. **अराजपत्रित पद शीघ्र भरे जाए** – संगठन द्वारा 6 जनवरी 2015 को उच्च शिक्षा मंत्रीजी एवं विभाग के अन्य अधिकारियों के साथ सम्पन्न बैठक में पुन: यह ध्यान दिलाया गया था। अधिकांश महाविद्यालयों में लिपिक, प्रयोगशाला सहायक, मैकेनिक सहित अन्य अराजपत्रित पद लम्बे समय से रिक्त पड़े हैं, इस कारण से विद्यार्थियों की शिक्षा एवं महाविद्यालय के सामान्य शैक्षणिक व प्रशासनिक कार्य बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। संगठन की मांग पर बैठक में उच्च शिक्षा मंत्रीजी ने अधिकारियों को उचित कार्यवाही के निर्देश दिये थे। इसकी अनुपालन में आयुक्तालय के सत्र क्रमांक एफ 1 (106) पी एस/निकाशि/13/2266 दि० 22-1-15 एवं समसंख्यक पत्र क्रमांक 2268 दि० 27-1-15 द्वारा अराजपत्रित पदों की निर्धारित पप्रत्र में सूचना मांगी है। संगठन ने आग्रह किया है इस कार्यवाही में शीघ्रता लाकर रिक्त अराजपत्रित पदों को भरने की प्रक्रिया प्रारम्भ की जाए।

सांगठनिक एवं वैचारिक गतिविधियाँ

कर्त्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम सम्पन्न – रुक्टा (राष्ट्रीय) की विभिन्न इकाईयों द्वारा कर्त्तव्य बोध दिवस महासंघ की योजनानुसार सम्पन्न किये गये।

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, **अजमेर** में मुख्यवक्ता रा. स्व. संघ के क्षेत्र संघचालक मा. पुरुषोत्तम पंराजपे ने शिक्षकों को समाज एवं राष्ट्रहित में कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि समाज को देने के लिए पद, जाति, धर्म, उम्र का कोई बंधन नहीं होता यदि व्यक्ति ठान ले तो वह अपनी क्षमताओं के आधार पर समाज एवं राष्ट्र का कल्याण कर सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. दीपकराज महरोत्रा ने की। महामंत्री डॉ. नारायणलाल गुप्ता ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। कार्यक्रम का संचालन अनूप आत्रेय ने किया जबकि आभार प्रदर्शन डॉ. सुशील कुमार बिस्सु ने किया।

राजकीय महाविद्यालय, **सवाईमाधोपुर** में मुख्य वक्ता प्रो. भरतराम कुम्हार, मंत्री विद्याभारती, राजस्थान एवं पूर्व अध्यक्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान थे। उन्होंने छात्रों को संस्कारवान बनाकर उनमें राष्ट्रीय भावना पैदा करने का आह्वान उपस्थित शिक्षक समुदाय से किया। अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. मनीराम ने की जबकि विशिष्ट अतिथि डॉ. हरलाल मीणा थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिनेश शर्मा ने किया तथा कार्यक्रम की भूमिका संभाग संगठन मंत्री डॉ. राजेन्द्र शर्मा ने रखी।

राजर्षि महाविद्यालय, बाबू शोभाराम कला महाविद्यालय तथा गौरीदेवी कन्या महाविद्यालय **अलवर** का संयुक्त कार्यक्रम कला महाविद्यालय में महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। उन्होंने उद्‌बोधन देते हुए कहा कि शिक्षक यदि अधिकारों के साथ कर्त्तव्यों की बात भी करेंगे तो निश्चय ही उन्हें खोया हुआ सम्मान वापिस मिलेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. यशोदा मीणा ने की। संयुक्त मंत्री डॉ. गंगाश्याम गुर्जर ने विषय की प्रस्तावना रखी। संचालन डॉ. धनंजयसिंह एवं डॉ. हेमा देवरानी ने किया।

राजकीय कन्या महाविद्यालय, **डूंगरपुर** में आयोजित कर्त्तव्य बोध कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. नारायणलाल जोशी, सहायक निदेशक कॉलेज शिक्षा ने कहा कि हमें अधिकारों की बात करने से पहले कर्त्तव्यों की समझ होनी चाहिए। विभाग सचिव डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा ने कार्यक्रम की उपादेयता पर विचार व्यक्त किये। संचालन इकाई सचिव डॉ. विवेक मण्डोत ने किया।

जेडीबी कन्या महाविद्यालय, **कोटा** में सम्पन्न कर्त्तव्य बोध कार्यक्रम में मुख्य वक्ता महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विमल

प्रसाद अग्रवाल थे। उन्होंने कहा कि आज भारत उपभोक्ता समाज है, उसे निर्माता समाज बनाना है, यह कार्य शिक्षकों के माध्यम से ही संभव है, कार्यक्रम की अध्यक्षता जेडीबी कला महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. हरिसिंह मीणा ने की।
राजकीय महाविद्यालय, **धौलपुर** में कर्त्तव्य बोध कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ. डी. के. बंसल ने कहा कि मूल्याश्रित शिक्षा व चरित्रवान समाज के साथ राष्ट्रीय हित में शिक्षकों को अपनी सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. एस पी. अवस्थी ने की तथा संचालन विभागीय सचिव डॉ. मनोज शर्मा ने किया।
राजकीय महाविद्यालय, **सरदारशहर** में मुख्य वक्ता ब्रह्मकुमारी भाविका दीदी तथा मुख्य अतिथि सहसंगठन मंत्री डॉ. दिग्विजयसिंह थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. आई. आर. जांगिड़ ने की तथा संचालन विभागीय सहसचिव डॉ. देवीशंकर शर्मा ने किया।
राजकीय महाविद्यालय, **बून्दी** में कर्त्तव्य बोध दिवस प्राचार्य डॉ. स्निग्धा दुबे की अध्यक्षता तथा विभागीय अध्यक्ष डॉ. बी. के. योगी एवं विभागीय सचिव डॉ. गीताराम शर्मा के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। डॉ. योगी ने कहा कि शिक्षक शिक्षा के प्रति और समाज शिक्षक के प्रति कर्त्तव्य बोध को सदैव जागृत रखे। डॉ. गीताराम शर्मा ने बताया कि रुक्टा के साथ जुडा राष्ट्रीय शब्द हमारी कर्त्तव्य बोध की अवधारणा को स्पष्ट करता है। कार्यक्रम में विषय की भूमिका विभागीय सहसचिव डॉ. राहुल सक्सेना ने रखी।
राधाकृष्णन शिक्षा संकुल परिवार द्वारा राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में आयोजित कर्त्तव्य बोध कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल ने कहा कि राष्ट्र का निर्माण करने में चरित्रवान युवकों की महती भूमिका है एवं चरित्रवान युवक तैयार करने की जिम्मेदारी समाज व शिक्षकों की है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा प्रो. सरबणसिंह थे। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. वन्दना चक्रवर्ती ने की। संचालन डॉ. ममता रोकणा ने किया तथा धन्यवाद इकाई सचिव डॉ. ममता चतुर्वेदी ने ज्ञापित किया।
राजकीय वाणिज्य महाविद्यालय, **कोटा** में सम्पन्न कार्यक्रम में डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल ने मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि शिक्षक अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्त्तव्यों पर भी ध्यान दे तो सभी समस्याओं का निदान हो जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज प्राचार्य डॉ. हुकुमचन्द जैन ने की। विषय प्रवर्तन डॉ. अशोक गुप्ता ने किया, संचालन डॉ. दिनेश तिवारी ने किया तथा डॉ. मंजुला त्यागी ने आभार प्रदर्शन किया।
रामेश्वरी देवी कन्या महाविद्यालय, **भरतपुर** में आयोजित कर्त्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम में मुख्य वक्तव्य देते हुए डॉ. प्रमोद शर्मा ने कहा कि शिक्षक विद्यार्थियों को मात्र शिक्षा ही नहीं दे अपितु संस्कार भी प्रदान करे। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के साथ ऐसा तालमेल रखना होगा कि वो अपने जीवन की समस्त सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए गुरुजनों के पास सहजता से जा सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. अशोककुमार बंसल ने की। विषय प्रवर्तन डॉ. मानवेन्द्र चतुर्वेदी ने किया, संचालन डॉ. सुनीलकुमार गुप्ता एवं आभार प्रदर्शन डॉ. रजनी वशिष्ठ ने किया।
राजकीय कन्या महाविद्यालय, **अजमेर** में कर्त्तव्य बोध दिवस शिक्षा बचाओ आन्दोलन के प्रदेश संयोजक डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य में मनाया गया। उन्होंने अनुशासित जीवन जीने पर बल देते हुए देश व समाज के हित में कार्य करने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्या डॉ. रेनू शर्मा थी। संचालन डॉ. प्रवीण माथुर तथा आभार प्रदर्शन डॉ. एस. के शर्मा ने किया।
राजकीय बाबा भगवान दास महाविद्यालय, **शाहपुरा** में आयोजित कर्त्तव्य बोध दिवस के मुख्य अतिथि शैक्षिक महासंघ के महामंत्री प्रो. जगदीश प्रसाद सिंघल ने कहा कि शिक्षकों को विद्यार्थियों को शिक्षा देने के साथ-साथ उनका मार्गदर्शन करते हुए समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव की जिम्मेदारी से भी अवगत करवाते रहना चाहिए। प्राचार्य ओ. पी. अग्रवाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की, संचालन डॉ. सरस्वती मित्तल एवं आभार प्रदर्शन प्रो. सूरजमल चन्दोलिया ने किया।
राजकीय महाविद्यालय, **कोटा** में कर्त्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कर्नल रघुराज सिंह हाड़ा ने कहा कि निष्काम कर्मयोग के मार्ग से ही हम अपनी सामाजिक जवाबदेही के साथ एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपने कर्त्तव्य को निभा सकते हैं। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि प्रो. सुरेशचन्द्र राजोरा थे। अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. टी. सी. लोया ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुब्रत शर्मा ने किया तथा धन्यवाद डॉ. मंजू गुप्ता ने दिया।

राजकीय महाविद्यालय, **किशनगढ़** में आयोजित कर्त्तव्य बोध कार्यक्रम में मुख्य वक्तव्य देते हुए महामंत्री डॉ. नारायण लाल गुप्ता ने धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ में संतुलन स्थापित करते हुए समाजनिष्ठ जीवन जीने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यवाहक प्राचार्य प्रो. सहदेवदान ने की। संचालन डॉ. माणक जैन ने किया तथा धन्यवाद डॉ. अश्विनी गर्ग ने दिया।

एम. एस. जे. महाविद्यालय, **भरतपुर** में आयोजित कर्त्तव्य बोध दिवस में मुख्य वक्तव्य देते हुए डॉ. रामकृष्ण शर्मा ने कहा कि जीवन में सफलता का नहीं, सार्थकता का महत्व है एवं सार्थकता कर्त्तव्य बोध से आती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. उमेश चन्द शर्मा ने की। विषय प्रर्वतन डॉ. सतीश त्रिगुणायत ने किया। संचालन डॉ. अनिल सक्सेना ने किया तथा धन्यवाद डॉ. जग्गोसिंह ने दिया।

राजकीय महाविद्यालय, **जयपुर** में आयोजित कर्त्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम में मुख्यवक्ता प्रो. जगदीश प्रसाद सिंघल ने कहा कि हमें अपने कार्य के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। उन्होंने कहा कि चरित्र निर्माण के लिए निरन्तर कर्त्तव्य का बोध रहना आवश्यक है। कार्यक्रम में विवेकानंद केन्द्र की रचना दीदी ने विवेकानंद जी के जीवन प्रसंगों से कर्त्तव्य की महत्ता बताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. ज्योसना भारद्वाज ने की। संचालन डॉ. पी. एल. गुप्ता तथा धन्यवाद डॉ. संजीव त्यागी ने दिया।

राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, **उदयपुर** ने कर्त्तव्य बोध दिवस के मुख्य अतिथि पूर्व प्रशासनिक अधिकारी श्री कैलाश बिहारी भारतीय ने कर्त्तव्य को संस्कार से जोड़ते हुए उसे ज्ञान, भाव विचार स्वभाव एवं व्यवहार में परिणित करने का आग्रह किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय सहायक निदेशक डॉ. नारायणलाल जोशी ने की। स्वागत प्राचार्य डॉ. रामेश्वर आमेटा ने किया। विषय की प्रस्तावना डॉ. शिवे शर्मा ने रखी तथा संचालन डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा ने किया।

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, **बीकानेर** में कर्तव्य बोध दिवस पर प्रो. सुरेशचन्द्र अग्रवाल ने विषय रखा। राजकीय स्नातकोतर महाविद्यालय, **खैरवाड़ा** एवं राजकीय कन्या महाविद्यालय खैरवाड़ा के संयुक्त तत्वावधान में कर्तव्य बोध दिवस पर विचार गोष्ठी रखी गई। जिसमें डॉ. राकेश दशोरा, डॉ. सी. के. जैन, डॉ. ईश्वरसिंह राणावत, डॉ. अनुपमा आदि ने विचार व्यक्त किए।

एम. एस. राजकीय कन्या महाविद्यालय, **बीकानेर** में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता सहसंगठन मंत्री डॉ. दिग्विजयसिंह ने शिक्षकों से भावी पीढ़ी को ऐसे संस्कार एवं मूल्य प्रदान करने का आह्वान किया जिससे समाज व राष्ट्र सशक्त हो। कार्यक्रम की अध्यक्षता उपाचार्य डॉ. आशा गोस्वामी ने की।

राजकीय महाविद्यालय, **सिरोही** में आयोजित कर्त्तव्य बोध दिवस पर प्रो. आर. सी. गहलोत एवं डॉ. उषा चौहान ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. संजय पुरोहित ने किया।

राजकीय महाविद्यालय, **गंगापुर सिटी** में आयोजित कर्तव्य बोध कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संभाग संगठन मंत्री डॉ. राजेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि शिक्षक की शिक्षा में चूक होने पर समाज की दिशा अभिमन्यु जैसी हो जाती है, ऐसे में शिक्षक को अपने कर्त्तव्य की गरिमा समझनी चाहिए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. संतोष अग्रवाल थे जबकि अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. जागृति शर्मा ने की। संचालन विभागीय सहसचिव डॉ. बिहारीलाल मीणा ने किया।

डॉ. बी. आर. अम्बेड़कर राजकीय महाविद्यालय, **श्रीगंगानगर** में कर्त्तव्य बोध दिवस पर आयोजित विचार गोष्ठी में डॉ. रामसिंह राजावत, डॉ. अन्नाराम शर्मा, प्रो. आर. सी. सुथार आदि ने विचार प्रकट किये।

एम. एल. वी. महाविद्यालय, **भीलवाड़ा** में कर्त्तव्य बोध दिवस पर डॉ. श्याम सुन्दर भट्ट एवं प्रो. आर. एल. पीतलिया ने मुख्य विषय रखा। इस अवसर पर प्रो. विमला सिंघल, डॉ. कश्मीर भट्ट, डॉ. सावन जांगिड़ एवं इकाई सचिव डॉ. राजकुमार लढ़ा ने भी विचार रखे।

राजकीय महाविद्यालय, **झालावाड़** में आयोजित कर्त्तव्य बोध कार्यक्रम के मुख्यवक्ता प्रो. के. बी. भारतीय थे। कार्यक्रम का संचालन इकाई सचिव गजेन्द्र कुमार मालवीय ने किया।

राजकीय महाविद्यालय, **चौमूं** में शैक्षिक मंथन पत्रिका के प्रधान सम्पादक प्रो. संतोष पाण्डेय ने कहा कि कर्त्तव्य पालन के बिना अधिकार की बात करना बेमानी है। उन्होंने कहा कि कर्त्तव्य हमारी संस्कृति का अंग है एवं उसका स्वरूप बहुआयामी है। विभागीय अध्यक्ष प्रो. सीताराम पारीक ने विषय की प्रस्तावना रखी। अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. के. पी. मीणा ने की। संचालन इकाई सचिव डॉ. प्रतिभा गौड़ ने किया।

श्री कल्याण महाविद्यालय, **सीकर** में कर्त्तव्य बोध दिवस पर मुख्य विषय रखते हुए संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट ने कहा कि राष्ट्र निर्माण की जिम्मेदारी हम शिक्षकों के कन्धों पर है। राष्ट्र परम वैभव तभी प्राप्त कर सकता है जब सभी अपना कर्त्तव्य पालन ठीक ढंग से करें। कार्यक्रम का संचालन चेतन जोशी ने किया।

राजकीय महाविद्यालय, **सांभरलेक** में कर्त्तव्य बोध दिवस पर मुख्य अतिथि प्रो. जे. पी. सिंघल ने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी समर्पण भाव से निर्वाह करने का आह्वान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. आर. के. जाट ने की। विषय की प्रस्तावना डॉ. सीताराम पारीक ने रखी जबकि संचालन श्री गिरधारीलाल ने किया।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, **नाथद्वारा** में कर्त्तव्य बोध दिवस पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. शिवसिंह दुलावत, डॉ. रामसिंह भाटी, डॉ. शुभ्रा तिवारी, डॉ. के. एल. मीणा, डॉ. अरविन्द कुमार शर्मा, डॉ. मंजु कंछल, डॉ. विनिता श्रीवास्तव, डॉ. दिलीप पीपाड़ा, डॉ. पी. के. खींचा आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

आगामी कार्यक्रम

वर्ष प्रतिपदा समारोह पूर्वक मनाने का आग्रह - चैत्र शुक्ल एकम् (इस वर्ष 21 मार्च) से अपना नवीन भारतीय वर्ष विक्रम संवत् २०७२ का शुभ प्रारंभ हो रहा है। केन्द्र की योजनानुसार हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी नवसंवत्सर व्यक्तिशः एवं इकाईशः समारोह पूर्वक मनाया जाना है। महाविद्यालय/विश्वविद्यालय एवं सार्वजनिक स्थानों पर सामूहिक रूप से प्रसाद आदि वितरण कर नव वर्ष की शुभकामनाएं देनी चाहिए। इकाई स्तर पर भारतीय कालगणना के वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक महत्व पर परिचर्चा, संगोष्ठी का आयोजन करना भी अच्छा रहेगा। साथ ही व्यक्तिगत रूप से मित्रों एवं संबंधियों को आमने-सामने मिल कर अथवा कार्ड, पत्र, एस. एम.एस. आदि के माध्यम से बधाई संदेश एवं शुभकामनाएं प्रेषित करने का आग्रह है। इकाई द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न कर सूचना, प्रेस विज्ञप्ति, फोटो आदि महामंत्री कार्यालय को डाक द्वारा अथवा ई-मेल से भिजवाएं।

विद्यार्थियों की परीक्षाएं प्रारम्भ हो गई है, हम सब ने वर्ष भर विद्यार्थियों के साथ जो मेहनत की है निश्चय ही वह विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी ये विश्वास है। अपना नववर्ष भी चैत्र शु. १ से प्रारम्भ हो रहा है, इस शुभ अवसर पर यह शुभकामना करता हूँ कि यह वर्ष हम सब के लिए, हमारे परिवार के लिए, सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र के लिए सुख समृद्धि के नवीन क्षितिजों का विकास करे।

भवदीय

20, चित्रकूट कॉलोनी,
माकड़वाली रोड़, अजमेर-305004

(डॉ. नारायणलाल गुप्ता)
[महामंत्री]

अमृत वचन

''यदि आप विद्वान है, बलवान है और धनवान है तो आपका धर्म यह है कि अपनी विद्या, धन और बल को देश की सेवा में लगाओ। उनकी सहायता करो जो तुम्हारी सहायता के भूखे हैं। उनको योग्य बनाओ जो अन्यथा अयोग्य ही बने रहेंगे। जो ऐसा नहीं करते, वे अपनी योग्यता का उचित प्रयोग नहीं करते।''

- पं. मदनमोहन मालवीय

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)
53वाँ प्रांतीय अधिवेशन, बांसवाड़ा

दिनांक 18 व 19 फरवरी 2015

महामंत्री प्रतिवेदन

संगठन का 52वाँ प्रदेश अधिवेशन 15 व 16 जनवरी 2014 को राजकीय महाविद्यालय, अजमेर में सम्पन्न हुआ। 52वें अधिवेशन एवं उसके पश्चात् शिक्षक समस्याओं के समाधान हेतु संगठन की प्रमुख गतिविधियों एवं उपलब्धियों के साथ सम्पन्न सांगठनिक एवं वैचारिक कार्यक्रमों का विवरण आपके समक्ष प्रस्तुत है –

शिक्षक समस्याओं के संबंध में उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ

- **वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान के पात्र शिक्षकों की संवीक्षा** – 31 दिसम्बर 2008 के पश्चात् वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान हेतु पात्र शिक्षकों की संवीक्षा सरकार ने बिना किसी लिखित आदेश के रोक रखी थी। संगठन लम्बे समय से संवीक्षा सम्पन्न कराने के लिए सरकार पर दबाव बनाए हुए था तथा लगातार पत्रों एवं वार्ताओं के माध्यम से पात्र शिक्षकों को उनका न्यायोचित अधिकार दिलाने हेतु प्रयासरत था। संगठन के लगातार प्रयासों के फलस्वरूप अंतत: 189 शिक्षकों को वरिष्ठ वेतनमान एवं 356 शिक्षकों को चयनित वेतनमान के आदेश जारी कर दिए गए।
- **उपाचार्यों, स्नातक प्राचार्यों एवं स्नातकोत्तर प्राचार्यों की डीपीसी एवं पदस्थापन** – लम्बे समय से प्राचार्यों एवं उपाचार्यों के नहीं होने से महाविद्यालयों के सामान्य कामकाज प्रभावित हो रहे थे तथा पात्र शिक्षक उनके पदोन्नति के अधिकार से वंचित थे। इस संबंध में संगठन ने सरकार से निरन्तर वार्ता कर शीघ्र डीपीसी संपन्न करवाने की मांग की थी। संगठन के प्रयासों की परिणति में 24 दिसम्बर 2014 को उपाचार्यों एवं प्राचार्यों के लिए पात्र शिक्षकों की डीपीसी सम्पन्न हुई। डीपीसी संपन्न होने पर आचार संहिता के चलते पदस्थापन में देरी होने पर सरकार को चुनाव आयोग से अनुमति लेकर शीघ्र पदस्थापन करने की मांग की गई। सरकार द्वारा संगठन की मांग से सहमत होते हुए चुनाव आयोग से अनुमति लेकर सभी पदोन्नत शिक्षकों के पदस्थापन आदेश जारी कर दिए।
- **विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा परीक्षा पारिश्रमिक दर में वृद्धि** – पिछले लम्बे समय से विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा परीक्षा परिश्रमिक दरों में कोई वृद्धि नहीं की गयी थी। संगठन ने विभिन्न अवसरों पर पत्रों एवं भेंट वार्ताओं के माध्यम से परीक्षा पारिश्रमिक दरों को न्यायोचित रूप में बढ़ाने हेतु दबाव बना रखा था। संगठन की मांग पर अजमेर अधिवेशन में उच्च शिक्षा मंत्रीजी ने समुचित सहयोग की घोषणा की थी। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप अधिकांश विश्वविद्यालयों ने वीक्षण, उत्तर पुस्तिका जाँच, प्रश्न-पत्र निर्माण सहित अन्य परीक्षा कार्यों में दो से तीन गुणा वृद्धि की है अथवा विश्वविद्यालय की सिंडिकेट/बॉम ने वृद्धि की सिफारिश की है।
- **लोक सेवा आयोग से व्याख्याता भर्ती हेतु विज्ञप्ति जारी** – पिछले लम्बे समय से राज्य के कॉलेज शिक्षा विभाग में नई नियुक्तियाँ नहीं होने के कारण राज्य की उच्च शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। शिक्षक क्षमता से अधिक कार्यभार वहन कर रहे हैं, वहीं कई महाविद्यालयों में विषय शिक्षक नहीं होने से विद्यार्थियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। संगठन ने सरकार से रिक्त पदों की पूर्ति हेतु विभिन्न भेंटवार्ताओं एवं पत्रों के माध्यम से लगातार दबाव बनाया हुआ था। अंतत: संघर्ष सफल हुआ और राज्य सरकार की अभ्यर्थना पर राजस्थान लोक सेवा आयोग ने एक हजार से अधिक रिक्त पदों पर व्याख्याता भर्ती हेतु विज्ञप्ति जारी कर दी। शीघ्र ही रिक्त पदों पर नवीन नियुक्तियाँ होने की आशा है।
- **कॅरियर एडवांसमेन्ट योजना के अन्तर्गत वरिष्ठ, चयनित वेतनमान एवं पे बैंड-4 हेतु आवेदन** – 30-6-2013 तक पात्र शिक्षकों की वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान हेतु संवीक्षा सम्पन्न होने के साथ ही संगठन द्वारा सरकार पर दबाव बनाया गया कि 30-6-2015 तक वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान तथा पे बैंड-4 के पात्र शिक्षकों के आवेदन मंगवाकर अविलम्ब उनके वित्तीय अधिकार प्रदान किये जाएं तथा 30-6-2013 तक शेष रहे शिक्षकों के मामलों का निस्तारण करते हुए

उन्हें भी लाभ प्रदान किया जाए। संगठन के प्रयासों के चलते सरकार ने सकारात्मक कार्यवाही करते हुए आवेदन पत्र मंगवाने के आदेश जारी कर दिये हैं। प्राप्त आवेदनों की जाँच के बाद पात्र शिक्षकों को सी.ए.एस. का लाभ दिलवाने हेतु संगठन सजग है।

- **प्रायोगिक परीक्षा हेतु कर्तव्य पर माने के आदेश** – विश्वविद्यालयों की प्रायोगिक परीक्षा सम्पन्न कराने के लिए शिक्षकों को राज्य सरकार द्वारा अकादमिक अवकाश देने का प्रावधान रहा है। संगठन द्वारा सरकार के ध्यान में लाया गया कि प्रायोगिक परीक्षा कार्य को अकादमिक उपलब्धि से जोड़ कर नहीं देखा जा सकता है अत: बोर्ड परीक्षा की भांति ही विश्वविद्यालय परीक्षा हेतु भी कर्त्तव्य पर माना जाना चाहिए तथा ग्रीष्मावकाश में प्रायोगिक परीक्षा सम्पन्न करवाने के लिए कर्तव्य पर मानते हुए पीएल का लाभ दिया जाना चाहिए। संगठन के तर्कों से सहमत होते हुए अंतत: सरकार ने प्रायोगिक परीक्षा सम्पन्न करवाने के लिए कर्त्तव्य पर मानने एवं ग्रीष्मावकाश में पीएल का लाभ देने के संबंध में आदेश जारी कर दिये।
- **लोक सभा एवं पंचायती राज चुनाव में शिक्षकों की ड्यूटी गरिमानुसार लगाने के लिए की गई कार्यवाही** – संगठन द्वारा मुख्य निर्वाचन आयुक्त भारत सरकार, मुख्य निर्वाचन अधिकारी राजस्थान एवं समस्त जिला निर्वाचन अधिकारियों से लोक सभा एवं पंचायती राज चुनाव हेतु कॉलेज शिक्षकों की ड्यूटी पद, वेतन एवं वेतनमान के अनुरूप लगाने की मांग चुनाव से पर्याप्त समय पूर्व की गई। संगठन के प्रयासों से अधिकांश स्थानों पर शिक्षकों की ड्यूटी गरिमानुसार ही लगाई गई तथापि कतिपय जिला निर्वाचन अधिकारियों द्वारा लापरवाही से या जानबूझकर कॉलेज शिक्षकों की ड्यूटी पद, वेतन व वेतनमान में कनिष्ठ अधिकारियों से नीचे लगाई गई। संगठन द्वारा व्यक्तिश: मिलकर, पत्र एवं फैक्स के माध्यम से इसका तीव्र विरोध जताते हुए उचित संशोधन की मांग की गई। संगठन के प्रयासों में अधिकांश मामलों में ड्यूटियों में उचित संशोधन किये गये।
- **विधि महाविद्यालयों को स्वतंत्र दर्जा देने की ओर कदम** – संगठन द्वारा गत कई वर्षों से निरन्तर विधि महाविद्यालयों को स्वतंत्र दर्जा दिये जाने की मांग की जाती रही है। संगठन की मांग पर सरकार द्वारा विधि महाविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों के पद मूल पैतृक महाविद्यालयों से विधि महाविद्यालयों को स्थानांतरित कर प्राचार्यों को वित्तीय अधिकार प्रदान करने के आदेश जारी किये गए।
- **उपाचार्यों के पदस्थापन** – अप्रेल 2013 में पात्र शिक्षकों को उपाचार्य पद पर पदोन्नति आदेश जारी करने के बाद से ही संगठन ने लगातार पदोन्नत उपाचार्यों के पदस्थापन की मांग की थी। संगठन के प्रयासों से अंतत: जनवरी 2014 में सरकार ने उपाचार्यों के पदस्थापन कर दिए।
- **ग्रीष्मावकाश में रुक कर कार्य करने हेतु उपार्जित अवकाश के आदेश** – सत्र 2012-13 एवं 2013-14 के ग्रीष्मावकाश में जिन शिक्षकों ने महाविद्यालय में रुककर शासकीय कार्य निष्पादित किया था, उन्हें उनके द्वारा किये गए कार्य दिवसों के आधार पर उपार्जित अवकाश के आदेश संगठन के प्रयासों से जारी किए गए।
- **उच्च शिक्षा नियामक आयोग की स्थापना** – शिक्षा के बाजारीकरण एवं निजीकरण के कारण येन-केन प्रकरेण लाभ कमाने की प्रवृति के चलते उच्च शिक्षा में हो रही गिरावट पर संगठन गंभीर चिंता प्रकट करते हुए सरकार से उच्च शिक्षा नियामक आयोग के गठन की मांग निरन्तर कर रहा था। शैक्षिक महासंघ के जयपुर में हुए परिसंवाद में इस विषय को प्रमुखता से उठाया भी गया था। संतोष का विषय है कि संगठन की मांग पर उच्च शिक्षा नियामक आयोग बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ करने की सहमति सरकार ने दे दी है।
- **भेंट वार्ता** – शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं को गहनता से परख कर उनका यथाशीघ्र न्यायोचित समाधान करवाने हेतु समय-समय पर संगठन द्वारा प्रयास किये गए हैं। इसी क्रम में 22 जनवरी को मुख्यमंत्री, उच्च शिक्षा मंत्री एवं अतिरिक्त मुख्य सचिव (शिक्षा) से भेंट की गई। शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु उच्च शिक्षा मंत्री के साथ अतिरिक्त मुख्य सचिव (शिक्षा), प्रमुख शासन सचिव (उच्च शिक्षा), आयुक्त, अतिरिक्त आयुक्त, उप सचिव (उच्च शिक्षा), संयुक्त निदेशकों एवं अन्य अधिकारियों के साथ 8 मई, 9 जुलाई, 7 जनवरी एवं 4 फरवरी को विस्तृत बैठक सम्पन्न की गई। बैठक में संगठन की तरफ से शिक्षकों की विभिन्न लंबित समस्याओं के त्वरित समाधान की मांग करते हुए

समर्थन में विभिन्न दस्तावेज एवं तथ्य रखे गए। संगठन के दृष्टिकोण से सहमत होते हुए बैठक में विभिन्न समस्याओं के समाधान के क्रम में मंत्रीजी द्वारा सकारात्मक निर्देश प्रदान किए गए। इन निर्देशों की परिणति में वरिष्ठ व चयनित वेतनमान एवं उपाचार्यों तथा प्राचार्यों की डीपीसी जैसी कतिपय समस्याओं का समाधान हुआ है। पदनाम परिवर्तन की प्रक्रिया प्रशासनिक स्तर पर चल रही है। पूर्व सेवा के लाभ, पीएच.डी. के दोहरे लाभ जैसी समस्याओं को पुनः वित्त विभाग को विस्तृत नोट के साथ भिजवाने के निर्देश दिये गए हैं। निदेशक (अकादमी) के पद पर वरिष्ठतम शिक्षक की नियुक्ति हेतु नियम बनाने के निर्देश भी दिए गए हैं। अन्य समस्याओं पर भी वार्ता के क्रम में कार्यवाही प्रारंभ हुई है।

❖ **लिखे गए पत्र** – शिक्षकों की लम्बित एवं तात्कालिक सामूहिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं पर राज्यपाल, मुख्यमंत्री, उच्च शिक्षा मंत्री, अतिरिक्त मुख्य सचिव, उच्च शिक्षा सचिव, आयुक्त, विश्वविद्यालयों के कुलपति सहित अन्य संबंधित अधिकारियों को विस्तार से पत्र लिख कर समस्याओं के समाधान का प्रयत्न किया गया है। कई प्रमुख समस्याओं को हल करवाने में संगठन को सफलता भी प्राप्त हुई है। इस सत्र में विशेष रूप से लंबित समस्याओं पर तो सभी संबंधित पक्षों को पत्र लिखे ही हैं, साथ ही तात्कालिक एवं अन्य समस्याओं जैसे 2 जनवरी 2006 से 30 जून 2006 के मध्य वार्षिक वेतन वृद्धि वाले प्राध्यापकों को अन्य कर्मचारियों की भांति एक अतिरिक्त वेतन वृद्धि देने, वरिष्ठ एवं चयनित वेतनमान में वेतन नियतन करते समय अतिरिक्त वेतन वृद्धि का लाभ देते हुए विसंगतियों को दूर करने, पीएच.डी. उपाधि हेतु कोर्स वर्क में छूट देने, परीक्षा पारिश्रमिक बढ़ाने, प्रायोगिक परीक्षा में आंतरिक एवं बाह्य परीक्षक दोनों को मानदेय देने, स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को शोध निदेशक बनने का अवसर देने, एक बार शोध निदेशक के रूप में पंजीकृत शिक्षक को स्थानांतरण के उपरांत भी मान्यता देने, सभी विश्वविद्यालयों की बॉम/सिंडीकेट में महाविद्यालय शिक्षकों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने, राजस्थान स्वेच्छा ग्रामीण शिक्षा सेवा के शिक्षकों को सीएएस का लाभ देने, छठे एरियर का भुगतान करने, अनुदानित पद पर संचित मेडिकल व पीएल अग्रेनित करने, पुरानी पेंशन योजना का लाभ देने, पूर्व सेवा का लाभ जोड़ते समय चयनित वेतनमान संतोषजनक एसीआर के आधार पर देने, नैक मूल्यांकन हेतु समुचित व्यवस्थाएं करने, 52वें अधिवेशन के प्रस्तावों पर कार्यवाही करने, लोकसभा चुनाव में सेक्टर अधिकारी की ड्यूटी से शिक्षकों को मुक्त करने, अन्य राज्यों के लोकसेवा आयोग में जाने पर कर्तव्य पर मानने, सुखाड़िया विश्वविद्यालय में पेंशन भुगतान संबंधी निराकरण करने, न्यायालय से पूर्व सेवा का लाभ प्राप्त करने वाले शिक्षकों की फाइनेंस आईडी जारी करने सहित शिक्षकों की व्यक्तिगत समस्याओं के संबंध में तथ्यों एवं तर्कों सहित संबंधित पक्षों को विस्तृत पत्र लिखे गए। इन पत्रों के आधार पर उपर्युक्त कई समस्याओं के सकारात्मक समाधान हुए हैं। शेष पर संघर्ष जारी है। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा संवर्ग की राष्ट्रीय मांगों के संदर्भ में राष्ट्रीय कार्यकारिणी के निर्णयानुसार 15 सूत्रीय मांग पत्रक उच्च शिक्षा मंत्री, मुख्यमंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री एवं प्रधानमंत्री को प्रेषित किये गए।

गत सम्मेलन के पश्चात् प्राध्यापकों की समस्याओं के निराकरण हेतु संगठन विभिन्न गतिविधियों, भेंटवार्ताओं, ज्ञापनों एवं पत्राचार के माध्यम से निरन्तर सक्रिय रहा है। संगठन की सक्रियता के परिणामस्वरूप पूर्व में लंबित एवं तात्कालिक रूप से उत्पन्न कई समस्याओं का समाधान भी शिक्षक हित में हुआ है। किन्तु रुक्टा (राष्ट्रीय) कतिपय कुछ समस्याओं के समाधान से संतुष्ट होने वाला नहीं है, संगठन निरन्तर संघर्ष कर बढ़ते जाने के मंत्र पर चलने वाला है। अभी कई प्रमुख समस्याओं का समाधान बाकी है। इनका जब तक शिक्षक हित में समाधान नहीं हो जाता, हम रुकने, थकने या बैठने वाले नहीं है। लोकतंत्रात्मक पद्धति से आप सभी शिक्षक साथियों के सहयोग से शेष सभी समस्याओं के निराकरण हेतु प्रयास जारी है।

सांगठनिक एवं वैचारिक गतिविधियाँ

❖ **प्रदेश अधिवेशन** – संगठन का 52वाँ प्रांतीय अधिवेशन 15 व 16 जनवरी 2014 को राजकीय महाविद्यालय, अजमेर में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में राज्य के सभी जिलों के राजकीय महाविद्यालयों एवं छह विश्वविद्यालयों के तीन हजार से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अधिवेशन के उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री श्री कालीचरण सराफ

थे, जबकि अध्यक्षता अजमेर उत्तर विधायक एवं पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी ने की। उद्घाटन सत्र में शाश्वत जीवन मूल्य विषय पर संगठन द्वारा प्रकाशित स्मारिका **नाऽऽन्य पंथा** का विमोचन भी किया गया। देराश्री स्मृति व्याख्यान मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री ए. के. पाण्डेय ने दिया। व्याख्यानमाला की अध्यक्षता विराटनगर विधायक डॉ. फूलचन्द भिण्डा ने की। इसके पश्चात् समूहश: बैठकें सम्पन्न हुई। अधिवेशन के द्वितीय दिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अकादमिक पाठ्यक्रमों की उपादेयता विषय पर शैक्षिक संगोष्ठी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के महामंत्री प्रो. जे. पी. सिंघल एवं अध्यक्ष राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो. परमेन्द्र दशोरा थे। अधिवेशन में अजमेर में निवास कर रहे विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के 103 सेवानिवृत्त शिक्षकों का सम्मान भी किया गया। खुले सत्र में महामंत्री प्रतिवेदन एवं 31 मार्च 2013 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के अंकेक्षित आय-व्यय विवरण तथा बैलेंस शीट को सदन के पटल पर रखा गया। जिसे सदन ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। इसके अतिरिक्त साधारण सभा ने पूर्व में पारित प्रस्तावों की पुन: पुष्टि करते हुए दो नवीन प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए - (1) उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, विस्तार एवं प्रभावी प्रबन्धन के लिए राज्य उच्च शिक्षा परिषद् का गठन अविलम्ब हो। (2) राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों के नैक से प्रत्यायन कराने के लिए समुचित संसाधन एवं सुविधाएं विकसित की जाए। समारोप कार्यक्रम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह-सेवा प्रमुख मा. गुणवंतसिंहजी कोठारी के मुख्य आतिथ्य एवं अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री मा. महेन्द्रजी कपूर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

- **महिला सम्मेलन** - केन्द्र के आह्वान पर महिला सहभाग वृद्धि वर्ष के अन्तर्गत रुक्टा (राष्ट्रीय) का प्रथम महिला सम्मेलन गौरी देवी कन्या महाविद्यालय, अलवर में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में अखिल भारतीय महिला समन्वय संयोजिका मा. गीताताई गुण्डे, शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री मा. महेन्द्र कपूर, शैक्षिक महासंघ की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. निर्मला यादव का मार्गदर्शन मिला। सम्मेलन में प्रदेश की 300 से अधिक महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- **शाश्वत जीवन मूल्य कार्यशालाएं** - संगठन के 14 कार्यकर्ताओं ने 15 जून 2014 को दिल्ली में शाश्वत जीवन मूल्य पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया। इसके पश्चात् केन्द्र की योजनानुसार संभागश: कार्यशालाएं आयोजित की गई। चित्तौड़ संभाग की कार्यशाला पैसिफिक विश्वविद्यालय उदयपुर, जयपुर संभाग की कार्यशाला राजकीय महाविद्यालय, झुंझुंनू में तथा जोधपुर संभाग की कार्यशाला राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर में सम्पन्न हुई। कार्यशालाओं के विभिन्न सत्रो में संतों, ध्येयनिष्ठ शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं ख्यातनाम चिंतकों का मार्गदर्शन मिला। कार्यशालाओं में औसत संख्या लगभग 100 रही।
- **उच्च शिक्षा नियामक तंत्र पर राष्ट्रीय परिसंवाद** - रुक्टा (राष्ट्रीय) एवं हिन्दी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय के आतिथ्य में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा उच्च शिक्षा में नियामक तंत्र पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद 13-14 सितम्बर 2014 को राजस्थान विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ। परिसंवाद में देश भर से 700 से अधिक शिक्षाविदों ने भाग लिया। परिसंवाद में प्राप्त चयनित शोध पत्रों को मीमांसा स्मारिका में मुद्रित किया गया। परिसंवाद के विभिन्न सत्रों में मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधराजी राजे, शिक्षा मंत्री श्री कालीचरणजी सराफ, ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया सहित संगठन के अखिल भारतीय अधिकारियों एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। संगठन द्वारा किए गए आतिथ्य एवं व्यवस्था की संभागियों द्वारा भूरि-भूरि प्रंशसा की गई।
- **कर्त्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम** - केन्द्र की योजनानुसार रुक्टा (राष्ट्रीय) की 56 इकाईयों ने 12 जनवरी से 23 जनवरी के मध्य कर्त्तव्य बोध दिवस प्रेरणास्पद वातावरण में सम्पन्न किए। कार्यक्रमों में संतों, ख्यातनाम शिक्षकों, चिंतकों, विचारकों ने मुख्य वक्तव्य दिया।
- **वर्ष-प्रतिपदा कार्यक्रम** - केन्द्र के आह्वान पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रुक्टा (राष्ट्रीय) की विभिन्न इकाइयों ने भारतीय नववर्ष विक्रम संवत् २०७१ समारोह पूर्वक मनाया। शिक्षक समुदाय द्वारा व्यक्तिश: मित्रों एवं संबंधियों को बधाई संदेश एवं शुभकामनाएं प्रेषित की गईं। सामूहिक रूप से महाविद्यालय/विश्वविद्यालय परिसर में तथा चौराहों पर

सभी को तिलक लगाकर एवं प्रसाद वितरित कर शुभकामनाएं दी गई। इसके अतिरिक्त अजमेर, अलवर, भरतपुर, कोटा में भारतीय नववर्ष के महत्व एवं भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता पर संगोष्ठियाँ भी आयोजित की गई।

- ❖ **गुरु वंदन कार्यक्रम** – केन्द्र के आह्वान पर रुक्टा (राष्ट्रीय) की 58 इकाइयों द्वारा गुरु वंदन कार्यक्रम समारोह पूर्वक मनाये गए। कार्यक्रम में महर्षि वेदव्यास के चित्र पर माल्यार्पण किया गया तथा मुख्य वक्ताओं द्वारा भारतीय गुरु परम्परा पर उद्बोधन दिया गया। कार्यक्रम में इकाई के प्राध्यापकगण व उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया।
- ❖ **शाश्वत जीवन मूल्य जनजागरण अभियान के अन्तर्गत आयोजित अन्य कार्यक्रम** – शाश्वत जीवन मूल्य जनजागरण अभियान के अन्तर्गत संगठन की कोटा इकाई के तत्वावधान में शाश्वत जीवन मूल्य–भारतीय दृष्टि विषय पर सार्वजनिक व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता ताई इन्दुमति काटदरे, संयोजिका पुनरुत्थान विद्यापीठ, अहमदाबाद एवं अध्यक्ष प्रो. विनयकुमार पाठक, कुलपति भगवान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा थे। कार्यक्रम में शहर के राजकीय महाविद्यालयों के शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों एवं समाज बंधुओं ने भी भाग लिया। संगठन की राजकीय महाविद्यालय, अजमेर इकाई के तत्वावधान में विद्यार्थियों की बात अभिभावकों के साथ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर पश्चिम क्षेत्र कार्यवाह श्री हनुमानसिंहजी राठौड़ थे। कार्यक्रम में 300 से अधिक अभिभावकों ने भाग लिया। राजकीय महाविद्यालय पाली इकाई के तत्वावधान में जोधपुर संभाग के शिक्षकों की सामाजिक समरसता एवं शाश्वत जीवन मूल्य विषय पर कार्यशाला संपन्न हुई। जिसमें मुख्यवक्ता महामंत्री एवं शैक्षिक प्रकोष्ठ संयोजक डॉ. राजेन्द्र शर्मा थे। कार्यक्रम में विभिन्न महाविद्यालयों के सौ से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया।
- ❖ **महापुरुषों की जयंतियों पर कार्यक्रम** – रुक्टा (राष्ट्रीय) द्वारा बाबा साहब अम्बेडकर, महाराणा प्रताप, स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों की जयंतियाँ समारोह पूर्वक मनाई गई। संगठन के कार्यकर्ताओं और सदस्यों ने सार्वजनिक स्थलों पर अवस्थित महापुरुषों की मूर्तियों पर माल्यार्पण किया तथा उनके व्यक्तित्व एवं कर्त्तत्व का स्मरण किया।
- ❖ **प्रांतीय कार्यकारिणी बैठकें** – 15 जनवरी, 30 अगस्त, 16 नवम्बर को प्रान्तीय कार्यकारिणी बैठकें एवं 22 जून को विस्तृत प्रांतीय कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न हुई। इनमें संगठन की विभिन्न गतिविधियों, सदस्यता एवं आगामी कार्ययोजना पर गंभीरता से विचार विमर्श कर निर्णय लिए गए।
- ❖ **राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठकें** – 1–2 फरवरी 2014 को कन्याकुमारी, 14 जून 2014 को दिल्ली, 1–2 नवम्बर 2014 को बेलगाम (कर्नाटक) में राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठकें सम्पन्न हुई। संगठन की ओर से इन बैठकों में अध्यक्ष, महामंत्री, संगठन मंत्री एवं प्रदेश महिला प्रतिनिधि ने सक्रिय सहभाग किया।
- ❖ **सदस्यता** – गत वर्ष की भांति इस वर्ष संगठन की सदस्यता अभियानपूर्वक जुलाई माह में ही सम्पन्न की गई। सभी कार्यकर्ताओं एवं प्राध्यापक साथियों ने इस अभियान का समर्थन करते हुए संगठन पर अपना विश्वास व्यक्त किया। इस वर्ष सदस्यता 5025 रही जो पिछले बार की सदस्यता से लगभग 27 प्रतिशत अधिक है।

शिक्षक समस्याओं के समाधान हेतु तथा संगठन के कार्य एवं विचार के विस्तार हेतु हुई गतिविधियाँ योजनानुसार सफलता पूर्वक सम्पन्न हो सकी हैं तो इसका सम्पूर्ण श्रेय संगठन के सक्रिय कार्यकर्ताओं और आप सब शिक्षक बंधु, बहिनों को ही है। संगठन के प्रति आप सबके प्रेम, सहयोग एवं विश्वास के कारण ही यह संभव हो पाया है। इन गतिविधियों या समस्या–समाधान की प्रक्रिया में आपकी अपेक्षानुसार जो कार्य नहीं हुआ है तो उसके लिए पूर्णत: स्वयं को उत्तरदायी मानकर आपसे करबद्ध क्षमायाचना करता हूँ तथा आपके निरन्तर सहयोग, मार्गदर्शन एवं विश्वास हेतु हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

भवदीय

(डॉ. नारायणलाल गुप्ता)
[महामंत्री]

रुक्टा (राष्ट्रीय) के 53 वें प्रान्तीय अधिवेशन में साधारण सभा द्वारा पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव क्रं. 1.

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) के 53वें प्रान्तीय अधिवेशन के अवसर पर संपन्न साधारण सभा पूर्व में स्वीकार किये गए उन सभी प्रस्तावों की पुनर्पुष्टि करती है जिन पर केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, संबंधित विश्वविद्यालय तथा आयुक्तालय द्वारा अभी भी कार्यवाही अपेक्षित है। साधारण सभा इन पर शीघ्र कार्यवाही का आग्रह करती है।

प्रस्ताव क्रं. 2. शोध हेतु सभी प्रकार के प्रोत्साहन एवं सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं

विश्व के विकसित राष्ट्रों के विकास का आधार उनके गुणवत्तापूर्ण शोध प्रबन्धन से सर्जित हुआ ज्ञान है। यदि हमें भी इस श्रेणी में आना है तो हमें हमारे शोध प्रबन्ध को पुनर्गठित करते हुए इसे उच्चतम मापदण्डों के अनुसार बनाना होगा। चूंकि उच्च शिक्षा संस्थान शोध के प्रमुख केन्द्र हैं, अत: राज्य सरकार को इन्हें शोध हेतु पर्याप्त संसाधन एवं सुविधाओं से युक्त करते हुए यह कार्य करने वाले शोधार्थिओं एवं प्राध्यापकों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करने की योजना बनानी होगी। इस संदर्भ में रुक्टा (राष्ट्रीय) की साधारण सभा का सुस्पष्ट मत है कि निम्न विषयों पर राज्य सरकार गंभीरता से विचार करते हुए शोध को आगे बढ़ने हेतु विशेष योजनाएं बनाएं।

1. यू.जी.सी. द्वारा घोषित प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करते हुए एम. फिल., पीएच.डी. करने वाले प्राध्यापकों के लिए 5 मई 2002 के पश्चात् रोकी गई विशेष वेतन वृद्धि योजना को पुन: चालू किया जाना चाहिए जिससे शोध करने कराने में उत्पन्न हो रही अरुचि को रोका जा सके।
2. निरन्तर एवं उच्च स्तरीय शोध को प्रोत्साहित करने हेतु शोध कार्य को कार्यभार का हिस्सा बनाया जाना चाहिए, साथ ही राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं, सम्मेलनों, परिसंवादों में भाग लेने हेतु अकादमिक अवकाशों को वर्ष पर्यन्त बिना किसी बाधा के स्वीकार करते हुए इनमें भाग लेने पर आने वाले व्यय का एक बड़ा भाग राज्य सरकार केन्द्र की सहायता से वहन करे तथा इस हेतु एक विशेष कोष की स्थापना की जाए।
3. शोध निदेशक के निर्देशन में प्राप्त की गई डिग्रियों, प्रकाशित उच्च स्तर के शोध पत्रों, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त सम्मानों, पेटेन्टस इत्यादि के आधार पर विशेष सम्मान एवं प्रोत्साहन योजनाएं लागू की जानी चाहिए। इससे शोध कार्यों में संलग्न व्यक्तियों में एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माहौल उत्पन्न होगा एवं उच्च स्तरीय शोध को बढ़ावा मिलेगा जो अन्तोतगत्वा राष्ट्र एवं राज्य को समृद्ध एवं शक्तिशाली बनाने में उपयोगी सिद्ध होगा। शोध कार्यों में संलग्न व्यक्तियों को अपने कार्य को विभिन्न संस्थानों में प्रस्तुत करने की एक योजना भी बनाई जाए जिससे विद्यार्थियों एवं समाज को उनके कार्यों का लाभ प्राप्त हो सके।
5. शोध कार्यों को संचालित करने हेतु आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर की व्यवस्थाएं, प्रयोगशालाओं का निर्माण, शोधार्थियों को अनुकूल वातावरण में रहने हेतु शोध हॉस्टलों, गेस्ट हाऊसेज का निर्माण बड़े महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में किये जाने का आग्रह है।
6. लघु एवं दीर्घ शोध प्रबन्धों की व्यापकता बढ़ाई जानी चाहिए, इसमें आ रही बाधाओं को दूर करने यथा ऐसे प्रबन्धों में संलग्न व्यक्तियों के स्थानान्तरण यथा संभव न किये जाए साथ ही एक बार जिसको शोध निदेशक माना जाता है उसे सम्पूर्ण कार्यकाल में शोध निर्देशक माना जाना चाहिए। अन्य कागजी कार्यवाही को भी जितना संभव हो उतना कम किया जाना भी सर्वथा उचित होगा।

अत: रुक्टा (राष्ट्रीय) की यह साधारण सभा राज्य सरकार से मांग करती है कि शोध संबंधित आधारभूत सुविधाओं का विकास करते हुए शोध हेतु सभी प्रकार के प्रोत्साहन एवं सुविधाएं अविलम्ब सकारात्मक सोच के साथ उपलब्ध कराये।

प्रस्ताव क्रं. 3. शैक्षिक परिसरों के वातावरण को संस्कारक्षम बनाने में सभी पक्षों द्वारा मिलजुल कर प्रयास किये जायें

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) की यह साधारण सभा महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में बढ़ती अनुशासनहीनता, पठन-पाठन के वातावरण का अभाव, छात्रों के मध्य व्याप्त संस्कारों की उपेक्षा

तथा दलगत राजनैतिक हस्तक्षेप से गुरु शिष्य परम्परा के साथ खिलवाड़ की स्थिति पर गहरी चिन्ता प्रकट करती है। साधारण सभा अपने इस स्पष्ट मत का प्रतिपादन भी दृढ़ता के साथ करती है कि संस्कारक्षम वातावरण के निरन्तर ह्रास का कारण गत कुछ वर्षों में सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियों, परिसरों में बढ़ते राजनैतिक हस्तक्षेप, सरकार द्वारा उच्च शिक्षा की उपेक्षा तथा बदलते सामाजिक परिवेश का छात्रों एवं अध्यापकों पर बढ़ता प्रभाव है। साधारण सभा यह महसूस करती है कि विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में होने वाले छात्र संघ चुनावों में अवांछनीय एवं अराजक घटनाक्रमों तथा प्रक्रियाओं को रोकने के लिए लिंगदोह कमेटी के गठन की आवश्यकता का महसूस किया जाना तथा समिति की रिपोर्ट के अध्यधीन चुनावों का संचालन करने की आवश्यकता की अपरिहार्यता परिसर संस्कृति पर गंभीर प्रश्न चिह्न खड़ा करती है।

एक ओर जहाँ पिछले कुछ वर्षों में परिसरों में संचालित छात्र संघ चुनावों में घटित अवांछनीय घटनाओं यथा हिंसा, परस्पर संघर्ष, परिसर के बाहर तक चुनाव प्रचार, उसमें प्रत्यक्ष राजनैतिक दलों की भूमिका तथा प्रभाव का प्रदर्शन परिसरों के वातावरण को लगातार दूषित कर रहा है। वहीं दूसरी ओर समाज में बढ़ती पाश्चात्योन्मुखता तथा विद्यालयी शिक्षा में हुए बेतहाशा बाजारीकरण से संचालित विद्यालयों में अध्ययन के पश्चात् महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाला छात्र समुदाय स्वच्छन्दता तथा उच्छृखंलता को स्वतंत्रता का पर्याय समझ परिसरों के वातावरण को दूषित करने में बड़ा योगदान दे रहा है, जो गंभीर चिंता का विषय है।

हमारी गुरु-शिष्य परम्परा में गुरु का अपने छात्रों से स्नेह तथा शिष्यों की अपने गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव रहा है। यह भारतीय संस्कृति की वह गौरवशाली परम्परा रही है जिसके कारण भारतीय परिसर न केवल संस्कार निर्माण के आदर्श थे वरन् सामाजिक संस्कृति और संस्कारों को दिशा देने का कार्य भी करते थे। परन्तु वर्तमान में समाज में भौतिकता और पश्चिम के प्रभाव ने इस परम्परा को गंभीर क्षति पहुँचाई है। न तो शिक्षकों के छात्रों के प्रति संतान सदृश्य स्नेह बचा है न ही छात्र की शिक्षक के प्रति अगाध श्रद्धा। इस परस्पर संबंध और संवाद के अभाव ने परिसर के संस्कारक्षम वातावरण पर गंभीर आघात किया है। रुक्टा (राष्ट्रीय) की यह साधारण सभा शिक्षक समुदाय से पुरजोर अपेक्षा करती है कि पथभ्रमित छात्रों को संतानवत् स्नेह प्रदान कर पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से मार्गदर्शन कर अध्यापन कार्य को आजीविका नहीं वरन् मिशन एवं कर्त्तव्य भाव से सम्पादित करें। साधारण सभा का यह स्पष्ट मत है कि शिक्षकों का यह कदम न केवल परिसरों के वातावरण को संस्कारक्षम बनाने में बल्कि विद्यार्थियों में गुरु के प्रति श्रद्धा निर्माण में बड़ी भूमिका का निर्वहन करेगा।

शासन की उपेक्षा को चलते परिसर की संस्कृति में ह्रास हुआ है। अत: रुक्टा (राष्ट्रीय) की यह साधारण सभा सरकार से यह मांग करती है कि विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा की समीक्षा कर शिक्षा के पाश्चात्यीकरण एवं बाजारीकरण पर प्रभावी अंकुश लगाए। साथ ही सभी राजनैतिक दलों से यह भी मांग करती है कि परिसरों में तथाकथित अंवाछनीय गतिविधियों में लिप्त असामाजिक तत्वों तथा अपने चहेतों के लिए हस्तक्षेप करना बन्द करें। यह साधारण सभा शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों, राजनैतिक दलों एवं शासन का आह्वान करती है कि सभी पक्ष मिलकर समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य बोध का परिचय देते हुए परिसरों के वातावरण को संस्कारक्षम बनाए रखने में अपना योगदान दे। साधारण सभा का यह दृढ़ विश्वास है कि सभी के मिले जुले प्रयासों से निश्चय ही सकारात्मक परिवर्तन के हम साक्षी बन सकेंगे।

शोक प्रस्ताव

रुक्टा (राष्ट्रीय) के गत अधिवेशन के पश्चात् शिक्षा जगत के हमारे कुछ साथी प्रभुतत्व में लीन हो गए हैं। संगठन के 53वें अधिवेशन की यह साधारण सभा प्रो. एस. सी. तेला अजमेर, प्रो. दर्शनसिंह बीकानेर, डॉ. के. के. शर्मा हनुमानगढ़, डॉ. विजेश गाँधी डूंगरपुर, डॉ. एस. डी. मिश्रा जयपुर, प्रो. बी. एल. माथुर भरतपुर, डॉ. लिली गेहानी अजमेर, प्रो. तोताराम सूरतगढ़ के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए इनकी सद्गति हेतु प्रार्थना करती है एवं परमपिता परमेश्वर से कामना करती है इनके परिजनों को इस असह्य दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)

आय-व्यय लेखा

31 मार्च 2014 को समाप्त वित्तीय वर्ष के लिए

इकाइयों को सहायता	79880.00	सदस्यता 2013-2014	319520.00
डाक व्यय	21175.00	इकाइयों से विशेष सहायता	19120.00
दूरभाष व मोबाईल	19261.00	इकाइयों का अंश	79880.00
प्रिंटिंग व स्टेशनरी	61899.00	आजीवन सदस्यता	3000.00
यात्रा व्यय	80033.00	बचत खाते पर ब्याज	10080.00
पारिश्रमिक	18000.00	मियादी जमा खाते पर ब्याज	245507.00
शैक्षिक महासंघ सदस्यता	3993.00	जोधपुर अधिवेशन की शेष राशि	29319.00
विविध व्यय	4220.00		
योग	**288461.00**		
आय का व्यय पर आधिक्य	417965.00		
कुल योग	**706426.00**	**योग**	**706426=00**

आय का व्यय पर आधिक्य -

गत वर्षों का आधिक्य	2235369.00	रोकड़ बचत बैंक खाता	
इस वर्ष का आधिक्य	417965.00	आई.सी.आई.सी.आई. बैंक	5976.00
कुल आधिक्य	2653334.00	यूको बैंक	213893.00
महामंत्री को देने बाकी	46769.00	**योग**	219869.00
		मियादी जमा खाता	
		आई.सी.आई.सी.आई. बैंक	1105331.00
		यूको बैंक	1374903.00
		योग	2480234.00
योग	**2700103.00**	**कुल योग**	**2700103.00**

ह.
डॉ. मधुर मोहन रंगा
अध्यक्ष

ह.
डॉ. नारायण लाल गुप्ता
महामंत्री

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने रुक्टा (रा.) के 31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष की लेखा पुस्तकें, आय एवं व्यय खाता और चिट्ठे का अंकेक्षण किया है और मैं प्रतिवेदित करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमारे अंकेक्षण उद्देश्य हेतु आवश्यक समस्त सूचनाएं एवं स्पष्टीकरण मैंने प्राप्त कर लिये हैं। मेरी राय में और मेरी जानकारी के अनुसार तथा मुझे जो सूचनाएं और स्पष्टीकरण दिये गए हैं, वे संगठन की स्थिति, विवरण (चिट्ठा) का 31 मार्च 2014 को सही और प्रमाणित स्थिति प्रकट कर रहा है और इस तिथि को आय का व्यय पर आधिक्य भी प्रकट हो रहा है।

ह.
(डॉ. सोमकान्त भोजक)
अंकेक्षक